लानत है ऐसे धर्म पर ....!!!

दिमाग की बत्ती जलाओ अंधविश्वास भगाओ। यदि "पूजा-पाठ " करने से ही" बुद्धि " और "शिक्षा" आती। तो..." पंडों की औलादें "ही विश्व में वैज्ञानिक-डॉक्टर-इंजीनियर" होती.. !! "वहम्" से बचों अपने बच्चों को "उच्च शिक्षा" दिलवाओ क्योंकि "शिक्षा" से ही वैज्ञानिक-डॉक्टर-इंजीनियर और शासक बनते हैं ..! "पूजा-पाठ" से नहीं..! अत: "वहम्" का कोई ईलाज नहीं ..!! और "शिक्षा" का कोई जवाब नहीं.. !! शिक्षित बनो संगठित रहो संघर्ष करो!

बलात्कार और सनातन धर्म

इन्द्र ने - गौतम ऋषि की पत्नी "अहिल्या" के साथ रेप किया!
चन्द्रमा ने - अर्क अर्पण करती ब्रहस्पति की पत्नी "तारा" के साथ रेप किया !
अगस्त्य ऋषि ने - सोम की पत्नी "रोहिणी" के साथ रेप किया !
ब्रहस्पति ऋषि ने - औतथ्य की पत्नी व मरूत की पुत्री "ममता" के साथ रेप किया!
पराशर ऋषि ने - वरुण की पुत्री "काली" के साथ रेप किया!
विश्वामित्र ने - अप्सरा "मोहिनी" के साथ सम्भोग किया !
वशिष्ठ ऋषि ने - "अक्षमाला" के साथ रेप किया !
ययाति ऋषि ने - "विश्ववाची" के साथ रेप किया !*
पांडु ने - "माधुरी" के साथ रेप किया !*
राम के पूर्वज राजा दण्ड ने - शुक्राचार्य की पुत्री "अरजा "के साथ रेप किया!
ब्रह्मा ने - अपनी बहिन गायत्री और पुत्री सरस्वती के साथ रेप किया!

ऐसी न जानें कितनी घटनाएँ धर्म ग्रन्थों में भरी पढ़ी हैं इस पोस्ट को करने का मेरा एक ही मकसद है मैं धर्म के ठेकेदारों से पूछना चाहता हूँ ? इन बलात्कारियों का दहन क्यों नहीं ? और- "रावण" जैसे विद्वान-शीलवान व्यक्तित्व का जिसने सीता का अपहरण तो किया पर कोई शील भंग नहीं किया, ऐसे नारी को सम्मान देने वाले रावण का दहन आखिर क्यों ?

भगवान से "न्याय" मिलता, तो "न्यायालय" नहीं होते। सरस्वती से "ज्ञान" मिलता, तो "विद्यालय"नहीं होते। दुआओं से काम चलता, तो "औषधालय" नहीं होते। बिन काम किये भाग्य नहीं चमकता, धर्म के दलालों की निजी दुकान है मंदिर, जो कि कुछ विशेष जाति के लोगो को ही फायदा पहुँचाने के लिए है।और इस निजी दुकान वही जाते हैं, जो दिमाग से गुलाम होते हैं।

इंसान को मान बैठा भगवान

मैं भी मंदिर बहुत गया हूँ। मंदिर में रखी मूर्ति के भोग भी बहुत लगाये हैं। भगवान के चरणों में रूपये भी बहुत रखे हैं। परंतु किसी भी भगवान को मैंने इंसान की समस्या के लिए दरबार लगाते नहीं देखा द्य कभी किसी भगवान को मैंने भक्त के लिए मंदिर के बंद दरवाजे खोलते हुए नहीं देखा। कभी भगवान को मंदिर यानी अपने घर में मोमबत्ती अगरबत्ती जलाते नहीं देखा। मंदिर में हो रहे बलात्कार को कभी रुकते नहीं देखा द्य

कभी किसी भगवान को मेरे द्वारा चढ़ाये गये भोग को सेवन करते नहीं देखा। कभी किसी भगवान को पानी पीते नहीं देखा। कभी किसी भगवान को नहाते नहीं देखा। कभी किसी भगवान को कपड़े लेकर पहनते नहीं देखा।कभी किसी भगवान को टॉयलेट जाते नहीं देखा। कभी किसी भगवान को उसके हाथ से पैसे पकड़ते नहीं देखा।

कभी किसी भगवान ने आशीर्वाद देने के लिए मेरे सिर पर हाथ नहीं रखा। कभी किसी भगवान ने मुझे गले नहीं लगाया। कभी किसी भगवान को मैंने मुझे दुःख-दर्द, परेशानी में मुझे संभालते नहीं देखा।

क्या देखा ? भगवान के नाम पर भोग खाते ब्राह्मण को देखा। भगवान के नाम पर पैसे लेते ब्राह्मण को देखा।भगवान के नाम पर कपड़े लेते और पहनते ब्राह्मण को देखा। भगवान के मंदिर में से पैसे उठाते ब्राह्मण को देखा।भगवान के मंदिर में चढ़ाये पैसों से मालामाल होते ब्राह्मण को देखा।

मैं बेवकूफ मंदिर गया भगवान को मानने और मान बैठा इंसान को भगवान। आस्था का सैलाब तो देखों कि जब ब्राह्मण को भगवान को लूटते देखा तो खुश हुआ परंतु भगवान के चढ़ावे को खुद उठाने से डरता था कि भगवान पर चढ़ाया हुआ लेना पाप है। भगवान नाराज होकर श्राप दे देगा। रे इंसान, तू आज के वैज्ञानिक युग में भी एक नालायक, चोर, लुटेरे इंसान को भगवान मान बैठा।

फार्म संख्या-2 / घोषणा पत्र-नियम 3 देखें

मै सतीश कुमार, पुत्र स्वर्गीय श्री निरंजन सिंह एतद् घोषित करता हूं कि मैं ''मज़दूर मोर्चा'' पाक्षिक पत्र का स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक और सम्पादक हूं जिसे 1/डी 2 बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फ़रीदाबाद से प्रकाशित किया गया है। तथा उक्त समाचार पत्र के सम्बंध में जो विवरण नीचे दिया गया है, वह मेरी जानकारी और विश्वास के अनुससार सत्य है-

1.	समाचार पत्र का नाम	मज़दूर मोर्चा
2.	पत्र की भाषा	हिन्दी
3.	प्रकाशन की अवधिकता	साप्ताहिक
4.	समाचार पत्र का खुदरा बिक्री मूल्य	2.50 रु.(दो रुपये पचास पैसे)
5.	प्रकाशक का नाम	सतीश कुमार
	राष्ट्रीयता	भारतीय
6.	पता	1डी/ 2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फ़रीदाबाद
	प्रकाशन का स्थान	1डी/ 2 बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फ़रीदाबाद
7.	मुद्रक का नाम	सतीश कुमार
	राष्ट्रीयता	भारतीय
	पता	1डी/ 2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एन आईटी फ़ारदाबाद
8.	उन मुद्रण प्रेसों का नाम जहां मुद्रण कार्य किया जाता हो तथा उन परिसर/ परिसरों का सही विस्तृत विवरण जिसमें प्रेस लगा हो-	एजीएस पब्लिकेशन्स डी-67, सैक्टर-6, नोएडा
प्रकाशक का नाम पता		सतीश कुमार 1डी/2बी.पी.नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फ़रीदाबाद
	नागरिकता	भारतीय

यह सप्ताह / भगवान

कोलंबा कालीधर

एक धार्मिक व्यक्ति था, भगवान में उसकी बड़ी श्रद्धा थी।

उसने मन ही मन प्रभु की एक तस्वीर बना रखी थी। एक दिन भक्ति से भरकर उसने भगवान से कहा- भगवान मुझसे बात करो।

और एक बुलबुल चहकने लगी लेकिन उस आदमी ने नहीं सुना। इसलिए इस बार वह जोर से चिल्लाया, भगवान मुझसे कुछ बोलो तो और आकाश में घटाएं उमड़ने घुमड़ने लगी, बादलो की गड़गडाहट होने लगी। लेकिन आदमी ने कुछ नहीं सुना।

उसने चारो तरफ निहारा, ऊपर- नीचे सब तरफ देखा और बोला, -भगवान मेरे सामने तो आओ और बादलो में छिपा सूरज चमकने लगा।पर उसने देखा ही नही,आखिरकार वह आदमी गला फाड़कर चीखने लगा भगवान मुझे कोई चमत्कार दिखाओ - तभी एक शिशु का जन्म हुआ और उसका प्रथम रुदन गूंजने लगा किन्तु उस आदमी ने ध्यान नहीं दिया।

अब तो वह व्यक्ति रोने लगा और भगवान से याचना करने लगा - भगवान मुझे स्पर्श करो मुझे पता तो चले तुम यहाँ हो, मेरे पास हो, मेरे साथ हो और एक तितली उड़ते हुए आकर उसके हथेली पर बैठ गयी लेकिन उसने तितली को उड़ा दिया, और उदास मन से आगे चला गया। भगवान इतने सारे रूपो में उसके सामने आया, इतने सारे ढंग से उससे बात की पर उस आदमी ने पहचाना ही नहीं शायद उसके मन में प्रभु की तस्वीर ही नहीं थी।

हम यह तो कहते हैं कि ईश्वर प्रकृति के कण-कण में है, लेकिन हम उसे किसी और रूप में देखना चाहते ही नही हैं, इसलिए उसे कही देख ही नहीं पाते।

इसे भक्ति में दुराग्रह भी कहते हैं।

भगवन अपने तरीके से आना चाहते है और हम अपने तरीके से देखना चाहते है और बात नहीं बन पाती..!! बात तभी बनेगी जब हम भगवान को भगवान की आँखों से देखेंगे।

70 साल में जो नहीं हुआ .....

विकास शर्मा

एक वैज्ञानिक नही दे पाई पिछली सरकारें ना ही कोई सेना बना पाए, छोटा मोटा सा युद्ध तो छोड़ो कोई सर्जिकल स्ट्राइक तक नही की पिछली सरकार ने! चांद पर जाना तो दूर की बात, एक हवाई जहाज वो नही बना पाए थे! ना इस देश में बिजली थी ना सड़क! मुझे अच्छी तरह से याद है कि 2014 तक मैं क्या रईस से रईस आदमी साइकिल पर चलता था। विदेशों में भारत के बारे में यह धारणा थी कि भारत कोई असभ्य और जंगली लोगों का देश है।भारत के आम नागरिक का तो छोड़िए भारत के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू को कोई नही जानता था। हमारे दादाजी की पीढ़ी के लोग बताते थे कि एक बार नेहरू जी इंग्लैंड गए,वहां उनको एयरपोर्ट पर ही एक कांसटेबल ने रोक कर पूछा "अबे तू कौन? नेहरू जी ने कहा भारत का प्रधानमंत्री तो उस कांसटेबल ने पूछा "भारत ये कौनसा देश है?"

फिर 2014 आया! खुशियों का पैगाम लाया! भारत में सड़कें बनी, पहले जो लोग नंगे रहते थे अब वो कपड़े पहनने लगे।केवल पुलिस ही नही, सीमाओं की सुरक्षा के लिए एक सेना बनाई गई, अब विश्व के तमाम मुल्क भारत के नाम से कांपने लगे!

कई बार तो इतने कांपने लग जाते की उन्हें ये पता ही नही चलता कि वो गलती से हमारे मुल्क में घुस गए और हमारे सैनिकों को मार देते। फिर कई वैज्ञानिक संस्थान बने हमने पहले लूना नामक टू व्हीलर बनाया और फिर तो हवाई जहाज ही नही मिसाइल तक बना डाली! 2015 में भारत विश्व का ऐसा पहला देश बना जिसने चांद पर मानव को भेजा! अब भारत को विश्व पहचानने लगा।पहले जिस देश के प्रधानमंत्री तक को कोई देश नही पहचानता था अब उस देश के साधारण से साधारण आदमी को एयरपोर्ट पर लेने खुद अमेरिका का राष्ट्रपति आने लगा और 2014 में बनी सेना ने पड़ोसी मुल्क को तो भारत का एक उपनिवेश बना ही दिया और बाकी मुल्कों ने भी भारत की अधीनता स्वीकार कर भारत को लगान के रूप में उनकी कुल कमाई का 20 प्रतिशत देना आरंभ कर दिया!

एक सरल चित्र है, लेकिन बहुत ही गहरे अर्थ के साथ।

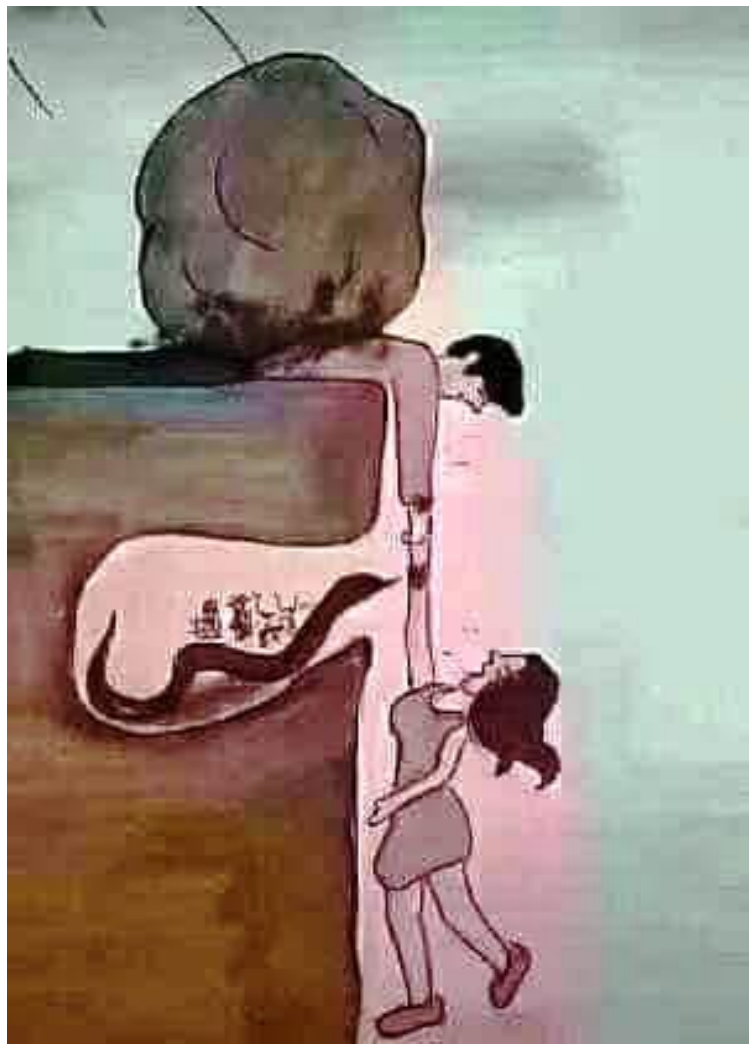

आदमी को पता नहीं है कि नीचे सांप है और महिला को नहीं पता है कि आदमी भी किसी पत्थर से दबा हुआ है।

महिला सोचती है: "मैं गिरने वाली हूँ! और मैं नहीं चढ़ सकती क्योंकि साँप मुझे काटने वाला है।"

आदमी थोड़ा अधिक ताकत का उपयोग करके मुझे ऊपर क्यों नहीं खींच सकता है!

आदमी सोचता है "मैं बहुत दर्द में हूँ! फिर भी मैं अभी भी आपको उतना ही खींच रहा हूँ जितना मैं कर सकते हूँ!सामने वाला खुद कोशिश क्यों नहीं करता और थोड़ा कठिन चढ़ाई को पार कर लेता?"

नैतिकता- आप उस दबाव को देख नहीं सकते जो सामने वाला झेल रहा है, और ठीक उसी तरह सामने वाला भी उस दर्द को नहीं देख सकता जिसमें आप हैं।

यह जीवन है, भले ही यह काम, परिवार, भावनाओं, दोस्तों, परिवार के साथ हो, आपको एक-दूसरे को समझने की कोशिश करनी चाहिए, अलग-अलग सोचना, एक-दूसरे के बारे में सोचना और बेहतर तालमेल बिठाना चाहिए।

हर कोई अपने जीवन में अपनी लड़ाई लड़ रहा है और सबके अपने अपने दुख हैं इसीलिए कम से कम हम जब सभी अपनों से मिलते हैं तब एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप करने के बजाय एक दूसरे को प्यार, स्नेह और साथ रहने की खुशी का एहसास दें, जीवन की इस यात्रा को लड़ने की बजाय प्यार और भरोसे से आसानी से पार किया जा सकता है।

- कोलंबा